दिनांक : 19 जनवरी, 2014

सड़क पर पार्टी को ज्यादा सहूलियत

– **अरुण जेटली**
राज्य सभामेंविपक्ष के नेता

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने अपनी पार्टी के सदस्यों के साथ गृहमंत्री के निवास के बाहर धरने पर बैठने का फैसला किया है। वे उन तीन पुलिस वालों को निलंबित करने की मांग कर रहे हैं, उनके अनुसार जिन्होंने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। जाहिर है कि एएपी सचिवालय की तुलना में इधर ज्यादा आराम महसूस कर रही होगी। पिछले तीन सप्ताहों पर नज़र डालें तो पार्टी खुद ही अपने विनाश में लगी हुई है।

देशभर में उसके सदस्य परस्पर विरोधी बातें कर रहे हैं। संगठन में किसी प्रकार का कोई अनुशासन नहीं है। विचारधारा रखनेवालों, सक्रिय कार्यकर्ताओं, अपने बारे में खुद राय बनाने वालों और खुद को सदाचारी कहने वालों से पार्टी भरी पड़ी है। आदर्श की भावना के साथ कुछ समर्थक पार्टी में शामिल हो चुके हैं या इसके लिए वोट दिया है। पार्टी बनाना और सरकार चलाना किसी आंदोलन का नेतृत्व करने से बहुत अलग है। दिल्ली में रहने वाले अफ्रीकी नागरिकों के साथ पार्टी के कानून मंत्री ने गंभीर समस्या खड़ी कर दी है। उनका दृष्टिकोण नस्लवादी लगता है। कुछ ही दिनों के अंदर ही पार्टी अपने गैर परम्परागत स्टाइल का खुद ही शिकार बन चुकी है। भीड़ फैसले नहीं ले सकती। इससे हद से हद आप लोगों को लुभा सकते हैं। पार्टी ने देश में अपने समर्थकों के बीच उत्साह पैदा करने के लिए दिल्ली में सरकार बनाई। आज सरकार में पार्टी का प्रदर्शन दिनों–दिन परेशानी में डालने वाला है। क्या एक दिन का सुनियोजित धरना कांग्रेस के साथ उस के गैर पारदर्शी प्रबंध को तोड़ लेने की चाल है ? क्या एएपी सरकार से बाहर निकलने का कोई तरीका ढूंढ कर वापस सड़क में आने का तरीका सोच रही है ? या ये कांग्रेस के तत्पर नहीं होने का फायदा उठा रही है और गृहमंत्री एएपी के दबाव में आ रहे हैं ?

*****